

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 43 — कुवल्यापीड का वध

5 October 2026



कंस की रंगशाला के द्वार पर एक मदोन्मत्त राजकीय हाथी दो ग्वाल-बालकों को कुचलने की प्रतीक्षा में खड़ा है — और जगत् के स्वामी, किसी गाँव के पहलवान की तरह कमर कसकर, राजा के ही अस्त्र को अपना अस्त्र बना लेते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध के इस तैंतालीसवें अध्याय में श्री शुकदेव गोस्वामी कृष्ण और बलराम को कंस की रंगशाला के द्वार तक ले आते हैं, जहाँ हाथी कुवल्यापीड प्रभु पर छोड़ दिया जाता है। वे उसे खेल-खेल में वश में करते हैं, उसका दाँत कन्धे पर रखे अखाड़े में उतरते हैं, हर हृदय द्वारा अपने ढंग से देखे जाते हैं, और मल्ल चाणूर की चुनौती पाते हैं।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)

- अध्याय: 43 (त्रिचत्वारिंश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: श्रीकृष्ण द्वारा कुवल्यापीड हाथी का वध
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: मथुरा में कंस की मल्लशाला का द्वार और उसके मंच
- केंद्रीय विषय: कुवल्यापीड का वध; रंगभूमि में प्रवेश, जहाँ एक प्रभु अनेक रूपों में दिखते हैं; नागरिकों द्वारा उनकी लीलाओं का स्मरण; चाणूर की चुनौती
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 43, श्लोक 1-40
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, दशम स्कन्ध, त्रिचत्वारिंश अध्याय)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

बयालीसवें अध्याय में कृष्ण ने कुबड़ी त्रिवक्रा को सीधा किया, कंस का यज्ञ-धनुष तोड़ा और उसके रक्षकों को तितर-बितर कर दिया। मृत्यु के अपशकुनों से त्रस्त राजा ने भोर होते ही मल्लशाला सजवाई; नन्द और गोप एक अलग मंच पर बैठे, और चाणूर, मुष्टिक आदि मल्ल अखाड़े में उतरे।

द्वार पर हाथी

शुकदेवजी ने कहा: अगले दिन स्नान आदि नित्यकर्म से निवृत्त होकर कृष्ण और बलराम ने पहलवानों का कोलाहल और नगाड़ों की गड़गड़ाहट सुनी, और वे दंगल देखने चल पड़े। रंगशाला के द्वार पर कृष्ण ने देखा कि महावत के आदेश से हाथी कुवल्यापीड उनके मार्ग में अड़ा खड़ा है।

प्रभु पल भर भी नहीं रुके। कमर का वस्त्र कसकर और घुँघराली अलकों को बाँधकर उन्होंने मेघ-गर्जना-सी गम्भीर वाणी में महावत से कहा:

अम्बष्ठाम्बष्ठ मार्गं नौ देह्यपक्रम मा चिरम् ।

नो चेत् सकुञ्जरं त्वाद्य नयामि यमसादनम् ॥ ४ ॥

ambaṣṭhāmbaṣṭha mārgaṁ nau dehy apakrama mā ciram no cet sa-kuñjaraṁ tvādyā nayāmi yama-sādanam

अर्थ: “हे महावत, हे महावत! हम दोनों को मार्ग दो और तुरन्त हट जाओ। यदि नहीं, तो आज ही मैं तुम्हें हाथी सहित यमलोक भेज दूँगा।”
(स्कन्ध 10, अध्याय 43, श्लोक 4)

इस धमकी से तिलमिलाकर महावत ने क्रोध में पहले से ही भड़के हुए हाथी को सीधे कृष्ण की ओर हाँक दिया — वह हाथी, जो समस्त प्राणियों का अन्त करने वाले काल और यम के समान दिखता था।



रंगशाला के द्वार पर कृष्ण पाते हैं कि हाथी कुवल्यापीड उनका मार्ग रोके खड़ा है; पहलवान की तरह अलकें बाँधकर वे महावत को मार्ग देने का आदेश देते हैं।

कुवल्यापीड के साथ प्रभु की क्रीड़ा

गजराज ने झपटकर तुरन्त कृष्ण को अपनी सूँड़ में लपेट लिया। किन्तु प्रभु उसकी लपेट से फिसलकर निकल गए, मुट्ठी से सूँड़ पर प्रहार किया और हाथी के पैरों के बीच ओझल हो गए। उन्हें देख न पाने वाले उस पशु ने गन्ध से उन्हें ढूँढ़कर सूँड़ के अग्रभाग से फिर पकड़ लिया; कृष्ण ने एक बार फिर बलपूर्वक अपने को छुड़ा लिया।

तब उस महाबली हाथी को पूँछ से पकड़कर प्रभु ने उसे पच्चीस धनुष की दूरी तक पीछे घसीट लिया — जैसे गरुड़ खेल-खेल में किसी सर्प को खींच ले जाएँ।

पुच्छे प्रगृह्यातिबलं धनुषः पञ्चविंशतिम् ।

विचकर्ष यथा नागं सुपर्ण इव लीलया ॥ ८ ॥

pucche pragṛhyāti-balaṁ dhanuṣaḥ pañca-viṁśatim vicakarṣa yathā nāgaṁ suparṇa iva līlayā

अर्थ: उस अत्यन्त बलशाली हाथी को पूँछ से पकड़कर उन्होंने उसे पच्चीस धनुष की दूरी तक लीलापूर्वक खींच लिया, जैसे गरुड़ किसी नाग को खींच ले जाते हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 43, श्लोक 8)

पूँछ थामे ही अच्युत प्रभु उस हाथी के साथ घूमते रहे, जो उन्हें पकड़ने को कभी बाँँ, कभी दाँँ मुड़ता था — जैसे कोई बालक बछड़े को घुमाता है। फिर वे उसके सामने आए, हाथ से उस पर प्रहार किया, और इतने पास दौड़े कि हर कदम पर मानो वह उन्हें छू ही रहा हो। खेल में धरती पर गिरकर वे तुरन्त उठ खड़े हुए; उन्हें गिरा समझकर क्रुद्ध हाथी ने अपने दाँत धरती में गाड़ दिए। पराक्रम विफल होने पर और महावतों के उकसाने पर वह फिर कृष्ण पर टूट पड़ा।



महाबली हाथी को पूँछ से थामकर प्रभु उसे पच्चीस धनुष की दूरी तक घसीटते और गोल-गोल घुमाते हैं, जैसे गरुड़ खेल में किसी सर्प को खींचते हैं।

हाथी का दमन

झपटते हुए हाथी के सामने जाकर भगवान् मधुसूदन ने हाथ से उसकी सूँड़ पकड़ी और उसे धरती पर पटक दिया। फिर गिरे हुए पशु पर सिंह की भाँति पैर रखकर उन्होंने खेल-खेल में उसका एक दाँत उखाड़ा और उसी से हाथी और उसके महावतों को मार गिराया।

पतितस्य पदाक्रम्य मृगेन्द्र इव लीलया ।

दन्तमुत्पाद्य तेनेभं हस्तिपांश्चाहनद्धरिः ॥ १४ ॥

patitasya padākramya mṛgendra iva līlayā dantam utpāya tenebhaṁ hastipāṁś cāhanad dhariḥ

अर्थ: गिरे हुए हाथी पर मृगराज के समान पैर रखकर और लीलापूर्वक उसका एक दाँत उखाड़कर श्रीहरि ने उसी से उस हाथी और उसके महावतों का वध कर दिया। (स्कन्ध 10, अध्याय 43, श्लोक 14)

मरे हुए हाथी को वहीं छोड़कर प्रभु दाँत कन्धे पर टिकाए आगे बढ़े; उन पर हाथी के रक्त और मद की बूँदें अंकित थीं और कमल-मुख पर पसीने की बूँदें चमक रही थीं — और इस रूप में वे पहले से भी अधिक सुन्दर लग रहे थे। कुछ ग्वाल-बालों से घिरे, हाथी के दाँतों को ही अपना श्रेष्ठ आयुध बनाए, बलराम और कृष्ण ने अखाड़े में प्रवेश किया।

एक प्रभु, अनेक दृष्टियाँ

अपने बड़े भाई के साथ रंगभूमि में खड़े प्रभु एक थे, फिर भी जितने हृदय उन्हें देख रहे थे, उतने ही रूपों में वे देखे गए।

मल्लानामशनिर्नृणां नरवरः स्त्रीणां स्मरो मूर्तिमान्
 गोपानां स्वजनोऽसतां क्षितिभुजां शास्ता स्वपित्रोः शिशुः ।
 मृत्युर्भोजपतेर्विराडविदुषां तत्त्वं परं योगिनां
 वृष्णीनां परदेवतेति विदितो रङ्गं गतः साग्रजः ॥ १७ ॥

*mallānām aśanir nṛṇām nara-varaḥ strīṇām smaro mūrtimān gopānām sva-jano 'satām kṣiti-
 bhujām śāstā sva-pitroḥ śīśuḥ mṛtyur bhoja-pater virāḍ aviduṣām tattvaṁ param yuginām
 vṛṣṇīnām para-devateti vidito raṅgaṁ gataḥ sāgrajaḥ*

अर्थ: अपने बड़े भाई के साथ रंगभूमि में प्रविष्ट वे पहलवानों को वज्र, पुरुषों को नरश्रेष्ठ, स्त्रियों को साक्षात् कामदेव, गोपों को अपना स्वजन, दुष्ट राजाओं को दण्डदाता, माता-पिता को शिशु, भोजराज को मृत्यु, अज्ञानियों को केवल एक स्थूल रूप, योगियों को परम तत्त्व और वृष्णियों को अपने परम आराध्य देव के रूप में प्रतीत हुए। (स्कन्ध 10, अध्याय 43, श्लोक 17)

यहीं इस अध्याय का हृदय है। कंस की रंगशाला में प्रवेश करने वाले प्रभु ने अपना रूप नहीं बदला; देखने वालों ने ही उन्हें बदल डाला। हर व्यक्ति ने उन्हें अपने हृदय के भाव और माप में पाया — पहलवान के भय ने उन्हें वज्र बना दिया, माता-पिता की ममता ने शिशु, योगी की खोज ने परम सत्य, और अपराधी राजा के आतंक ने मृत्यु। इसीलिए भागवत सिखाता है कि उनके साथ हमारा सम्बन्ध उसी भाव से गढ़ा जाता है जो हम लेकर आते हैं। वे स्वयं में पूर्ण हैं; हम उनमें जो देखते हैं, वह हमें ही उजागर करता है। प्रेम लेकर उनके पास जाइए, और आपके लिए वे प्रेम ही बन जाएंगे।

कुलयापीड को मरा देखकर और दोनों भाइयों को स्पष्ट रूप से अजेय जानकर कंस भीतर से काँप उठा, यद्यपि उसने अपना धैर्य बनाए रखा। विचित्र वेश, आभूषण, मालाओं और वस्त्रों से सजे दोनों महाबाहु भाई अपने तेज से दर्शकों को मोहते हुए रंगभूमि में ऐसे शोभित हुए जैसे श्रेष्ठ वेश धारण किए दो नट हों।



कन्धे पर दौत रखे दोनों भाई अखाड़े में उतरते हैं — पहलवानों के लिए वज्र, माता-पिता के लिए शिशु, कंस के लिए मृत्यु, योगियों के लिए परम तत्त्व।

दशकों को आँखें उनके सौन्दर्य को पीती हैं

मंचों पर बैठे नगर और देश के लोग हर्ष के आवेग से खिले हुए नेत्रों और मुखों से उन दोनों पुरुषोत्तमों को निहारते रहे।

निरीक्ष्य तावुत्तमपूरुषौ जना

मञ्चस्थिता नागरराष्ट्रका नृप ।

प्रहर्षवेगोत्कलितेक्षणाननाः

पपुर्न तृप्ता नयनैस्तदाननम् ॥ २० ॥

*nirīkṣya tāv uttama-pūruṣau janā mañca-sthitā nāgara-rāṣṭrakā nṛpa prahaṛṣa-
vegotkalitekṣaṇānānāḥ papur na tṛptā nayanais tad-ānanam*

अर्थ: हे राजन्, मंचों पर बैठे पुरवासियों और देशवासियों ने उन दोनों पुरुषोत्तमों को देखकर, आनन्द के वेग से विकसित नेत्रों और मुखों से, अपनी आँखों द्वारा उनके मुख का पान किया, किन्तु तृप्त न हुए। (स्कन्ध 10, अध्याय 43, श्लोक 20)

वे मानो दोनों भाइयों को आँखों से पी रहे थे, जीभ से चख रहे थे, नासिका से सूँघ रहे थे और भुजाओं से आलिंगन कर रहे थे; और मानो उनके रूप, गुण, माधुर्य और निर्भीकता से उनकी सारी कथा याद आ गई हो, वे एक-दूसरे को वह सब कहने लगे जो उन्होंने देखा और सुना था।

मथुरावासियों ने क्या कहा

“ये दोनों,” उन्होंने कहा, “निश्चय ही स्वयं भगवान् श्रीहरि नारायण के अंश हैं, जो वसुदेव के घर अवतरित हुए हैं। यह छोटा वाला देवकी से जन्मा और गोकुल ले जाया गया, जहाँ यह नन्द के घर में छिपकर पला-बढ़ा। इसी ने पूतना का अन्त किया, और बवण्डर बनकर आए दानव का, गुह्यक का, घोड़े के रूप में आए केशी का, धेनुक का; इसी ने यमलार्जुन को उखाड़ा, गायों और ग्वालों को दावानल से बचाया, कालिय नाग का दमन किया, और इन्द्र का घमण्ड तब चूर किया जब पूरे एक सप्ताह तक एक हाथ पर गोवर्धन थामे इस बालक ने गोकुल को वर्षा, आँधी और बिजली से बचाया। इसके सदा मुस्काते मुख को देखती गोपियाँ बिना प्रयास अपने अनेक दुःखों के पार हो गईं। ज्ञानी कहते हैं कि इसकी रक्षा में यदुवंश श्री, यश और महत्ता पाएगा। और यह है इसका बड़ा भाई, कमल-नयन श्रीमान् बलराम, जिसने प्रलम्ब को, बछड़े के रूप में आए दैत्य को, और बकासुर आदि को मारा।”

चाणूर की चुनौती

लोग इस प्रकार बातें कर रहे थे और तुरहियाँ गूँज रही थीं, तभी राजा के मल्लों में प्रमुख चाणूर ने कृष्ण और बलराम को सम्बोधित किया: “हे नन्दनन्दन, हे बलराम, आप दोनों वीरों में सम्मानित हैं। आपको मल्लयुद्ध में कुशल सुनकर, आपको देखने के इच्छुक राजा ने आपको यहाँ बुलाया है। जो प्रजा मन, वचन और कर्म से राजा का प्रिय करती है, वह कल्याण पाती है; जो इसके विपरीत चलती है, उसे उल्टा फल मिलता है। सब जानते हैं कि ग्वाले बछड़े चराने के दिनों से ही वनों में मल्लयुद्ध का खेल खेलते हुए गायें चराते हैं। इसलिए हम सब वही करें जो राजा चाहता है; तब सारे प्राणी हम पर प्रसन्न होंगे, क्योंकि राजा सब प्राणियों का स्वरूप है।”



राजा के मल्लों का प्रमुख चाणूर कंस के नाम पर दोनों भाइयों को कुश्ती का निमन्त्रण देता है; कृष्ण स्वीकार करते हैं, किन्तु बराबरी की स्पर्धा की माँग करते हैं।

श्रीकृष्ण का संतुलित उत्तर

कृष्ण ने प्रस्ताव का स्वागत किया, क्योंकि मल्लयुद्ध ठीक वही था जो वे चाहते थे; किन्तु उनका उत्तर देश और काल के अनुरूप था: “वनवासी हम भी आपकी ही तरह इस भोजराज की प्रजा हैं। हम सदा वही करें जो उसे प्रिय हो; यही हम पर सबसे बड़ा अनुग्रह है। फिर भी हम तो बालक हैं, और अपने बराबर बल वालों के साथ ही खेलेंगे। हे मल्ल, कुश्ती बराबरी की हो, ताकि इस सभा को अन्याय का पाप न लगे।”

बाला वयं तुल्यबलैः क्रीडिष्यामो यथोचितम् ।

भवेन्नियुद्धं माधर्मः स्पृशेन्मल्ल सभासदः ॥ ३८ ॥

bālā vayaṁ tulya-balaiḥ krīḍiṣyāmo yathocitam bhaven niyuddhaṁ mādharmāḥ spṛśen malla sabhāsadaḥ

अर्थ: हम तो बालक हैं; हम अपने समान बल वालों के साथ ही यथोचित क्रीड़ा करेंगे। हे मल्ल, मल्लयुद्ध समान बल का हो, जिससे इस सभा के सदस्यों को अधर्म स्पर्श न करे। (स्कन्ध 10, अध्याय 43, श्लोक 38)

चाणूर ने यह बात नहीं मानी। “तुम कोई बच्चे या किशोर नहीं हो,” उसने कहा, “और बलरामजी भी नहीं — जिसमें हजार हाथियों का बल था, उस हाथी को तुमने खेल में ही समाप्त कर दिया। इसलिए तुम दोनों को बलवान प्रतिद्वन्द्वियों से ही लड़ना चाहिए; इसमें कोई अन्याय नहीं। हे वार्ष्णेय, मुझ पर अपना पराक्रम दिखाओ, और मुष्टिक बलराम से भिड़े।” इसी चुनौती के साथ अध्याय समाप्त होता है।

इस अध्याय को प्रमुख शिक्षाएँ

1. प्रभु अपने मार्ग में रखी बाधा के बीच से सीधे निकल जाते हैं। कुवल्यापीड को कंस की योजना से द्वार पर खड़ा किया गया था, फिर भी कृष्ण न मुड़े, न कोई दूसरा द्वार ढूँढ़ा। भक्त की प्रभु तक पहुँच के विरुद्ध जो कुछ खड़ा किया जाता है, वह उनके हाथों में उनकी विजय का चिह्न बन जाता है।
2. उनका बल क्रीड़ा है। शुकदेवजी बार-बार “लीला” शब्द पर लौटते हैं: गरुड़ द्वारा सर्प खींचने जैसी पूँछ की खींच, घुमाया जाता बछड़ा, दाँत निकालता सिंह। जो हमारे लिए आतंक है, वह उनके लिए खेल है।
3. हर कोई उन्हें उतना ही देखता है जितना हृदय देखने दे। श्लोक 17 इस अध्याय का रत्न है: एक प्रभु, दस दृष्टियाँ। कृष्ण के प्रति हमारी दृष्टि हमारे ही स्वभाव का दर्पण है, इसलिए उन्हें मधुर रूप में देखने का सबसे सुनिश्चित उपाय एक प्रेमपूर्ण हृदय को साधना है।
4. उनका दर्शन उनकी चर्चा में उमड़ पड़ता है। जिस क्षण नागरिक उनके सौन्दर्य को आँखों से पीते हैं, वे एक-दूसरे को उनकी लीलाएँ सुनाने लगते हैं। दर्शन कीर्तन में पकता है; जिसने सचमुच प्रभु को देख लिया, वह उनके विषय में चुप नहीं रह सकता।
5. अखाड़े में भी पहले धर्म। यद्यपि कुश्ती ठीक वही थी जो वे चाहते थे, कृष्ण ने बराबरी की स्पर्धा माँगी ताकि सभा को कोई पाप न लगे। प्रभु दिखावे के लिए धर्म को कभी नहीं झुकाते, और वाणी में एक शत्रु राजा के अधिकार का भी सम्मान करते हुए अपना संकल्प अखण्ड रखते हैं।

एक भक्तिमय चिन्तन

इस अध्याय के बाद हृदय में जो रह जाता है, वह हाथी नहीं, बल्कि मंचों की वह भीड़ है। प्रभु, जिनके पास विजेता की तरह आने का हर कारण था, बाल बाँधे एक पहलवान की तरह आए और महावत से विनम्रता से रास्ता माँगा। फिर वे अखाड़े में खड़े हो गए और सबको वैसे देखने दिया जैसे वे चाहते थे। भयभीत ने वज्र देखा; प्रेमी ने शिशु; खोजी ने सत्य। जिसने उन्हें प्रेम किया, वह निराश नहीं हुआ। हम भी हर दिन उसी भीड़ में कहीं खड़े हैं; प्रश्न यह नहीं कि कृष्ण आएँगे या नहीं — वे तो द्वार से होकर आ ही चुके हैं — बल्कि यह कि हम उन्हें किन आँखों से मिलेंगे। यदि कंस का अपराध-बोध प्रभु के मुख को मृत्यु में बदल सकता था, तो थोड़ा-सा प्रेम उसे एक मित्र के मुख में अवश्य बदल सकता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज किसी को भी देखने से पहले एक साँस भर रुकिए और स्मरण कीजिए कि कंस की रंगशाला में दस प्रकार के हृदयों ने प्रभु को दस भिन्न रूपों में देखा। अपने से पूछिए कि आप किस हृदय से देख रहे हैं, और जहाँ तक हो सके, उन गोपों का हृदय चुनिए जिन्होंने उनमें अपना स्वजन देखा। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

दशम स्कन्ध का यह तैत्तलीसवाँ अध्याय कृष्ण को कंस की रंगशाला के द्वार से मल्लयुद्ध की ठीक दहलीज़ तक ले जाता है। कुवल्यापीड गिरता है, और दोनों भाई अखाड़े में प्रवेश करते हैं जहाँ हर हृदय उन्हें अपने ही ढंग से निहारता है। इसकी एक केन्द्रीय सीख यह है कि प्रभु वैसे ही दिखते हैं जैसा हम उन्हें देख पाते हैं। हम उनके पास प्रेम की आँखें लेकर जाएँ, ताकि जब वे हमारे जीवन के द्वार से होकर आएँ, तो हम उनमें अपने ही स्वजन को पहचान सकें।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), त्रिचत्वारिंश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।



ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-43-krishna-kills-the-elephant-kuvalayapida-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट